हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-3)

DTVF/18(JS)-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Jagdish Bagarwa

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | – |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 3. 31.07.18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में आर्य समाज का योगदान

राष्ट्रभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने में धार्मिक-सामाजिक सुधारकों का बड़ा योगदान रहा जिनमें 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है।

आर्य समाज ने हिन्दी को आर्यभाषा घोषित किया तथा आर्य समाज के 28 नियमों में से 5 वाँ नियम 'हिन्दी के अध्ययन' को निर्धारित किया।

इसके अलावा अहिन्दी भाषी क्षेत्र गुजरात तथा मुम्बई में आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी का प्रचार किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संस्कृत के विद्वान होकर भी हिन्दी में सत्यार्थ

प्रकाश लिखकर हिन्दी को समृद्ध किया।

आर्य समाज ने दयानन्द-

एंग्लो वैदिक विद्यालयों में तथा गुरुकुल कांगड़ी में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन कर इसके क्षेत्रीय प्रसार पर बल दिया।

गुरुकुल कांगड़ी में तो विज्ञान के विषयों की शिक्षा भी हिन्दी में दी जाती थी। इस प्रकार राष्ट्रभाषा को सभी क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने में आर्यसमाज ने महती भूमिका अदा की।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का योगदान

लोकमान्य तिलक स्वतः अहिन्दीभाषी क्षेत्र महाराष्ट्र से सम्बन्ध रखते थे तथा उस क्षेत्र में उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया।

तिलक स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे तथा उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को राष्ट्रलिपि घोषित किया। उन्होंने अपने समाचार पत्र ~~के~~ 'केसरी' को हिन्दी में भी 'हिन्दी केसरी' नाम से निकाला।

इसके अलावा तिलक का मानना था कि देश की राजनीतिक एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना अत्यावश्यक है तथा हिन्दी ही वह राष्ट्रभाषा हो सकती है।

तिलक ने न केवल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में वैचारिक समर्थन दिया बल्कि हिन्दी के विकास हेतु धरातल स्तर भी कार्य किया। इन्होंने अनावश्यक टाइपों को हटाकर 180 टाईपों का तिलक फॉन्ट भी तैयार किया था।

इस प्रकार स्वदेशी के प्रबल समर्थक तिलक ने हिन्दी को स्वदेशी मानकर राष्ट्रभाषा बनाने की मांग रखी।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं और अन्य लिपियों का प्रभाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि मूलतः संस्कृत की लिपि है तथा देवनागरी में ही आज भी मानक हिन्दी को लिखा जाता है।

देवनागरी लिपि में क़, ख़, ग़, ज़, फ़ जैसे संकेत विदेशी भाषाओं से आए हैं तथा इन्हें देवनागरी में आज स्वीकार्यता भी प्राप्त है।

- पूर्ण विराम का रोमन संस्करण

आज देवनागरी में खड़ी पाई के स्थान पर अंग्रेजी की रोमन लिपि का पूर्ण विराम (फुल स्टॉप) भी प्रचलित है।

- ऋ, दीर्घ ॠ, ऌ तथा दीर्घ ॡ का सीमित प्रयोग

हिन्दी की सहयोगी भाषाओं के चलते ही देवनागरी में ऌ तथा ॠ के प्रयोग सीमित हुए हैं।

Copyright © Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उन्नीसवीं सदी का खड़ी बोली आन्दोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली को एकमात्र काव्यभाषा के रूप में स्थापित करने का आंदोलन चला जिसका सांकेतिक नेतृत्व अयोध्या प्रसाद खत्री ने किया। अयोध्या प्रसाद खत्री ने देश भर में घूमकर तथा छपे पर्चों के माध्यम से खड़ी बोली के पक्ष में आंदोलन चलाया तथा ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली को रखने का आग्रह किया।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वतंत्रता-आंदोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महात्मा गाँधी ने न केवल राजनीतिक आजादी के लिए संघर्ष किया बल्कि अंग्रेजों द्वारा लादी गई पाश्चात्य संस्कृति को हटाने के लिए सांस्कृतिक आजादी हेतु संघर्ष भी किया।

आंग्ल भाषा की औपनिवेशिकता को हटाना उन्होंने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया।

उन्होंने कहा - हिन्दी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है। हिन्दी ही स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा होगी।

इसके अलावा उनका मानना था कि "स्वराज भूखों, दलितों तथा अन्त्यजों का है तथा उनकी भाषा हिन्दी है"

उन्होंने राष्ट्रभाषा की कसौटियाँ भी निर्धारित की —

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- सीखना आसान हो
- बहुसंख्यक लोग जानते हों
- धार्मिक, राजनीतिक व्यवहार हो सकें

इन कसौटियों पर गाँधीजी ने उत्तरी वाली हिन्दी को खरा पाया।

1918 के इन्दौर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में गांधी जी ने सभी पत्र-पत्रिकाओं तथा कांग्रेस को हिन्दी में कार्य करने का निर्देश दिया तथा दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार हेतु अपने पुत्र देवदास गाँधी को मद्रास भेजा।

दक्षिण भारत में ~~हिं~~ हिन्दी प्रचार हेतु वर्धा तथा मद्रास में राष्ट्रभाषा प्रचार सभा की स्थापना की

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रामविलास शर्मा ने यह है कि दक्षिण भारत के हिन्दी गाँधीजी की देन है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में आंध्रप्रदेश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंध्रप्रदेश - शेष राज्यों के लिए एक आदर्श।

- 1923 के काकीनाडा अधिवेशन का स्वागत भाषण हिन्दी में
- कोंडापि जगदय्या तथा पट्टाभि सीतारमैया की भूमिका
- जनार्दन स्विवक स्वामी की भूमिका कोश रचना, हिन्दी व्याकरण, हिन्दी तेलुगु प्रेस
- आंध्र में नेहरू के राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) 'उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में शिवप्रसाद सितारे-हिंद का योगदान अप्रतिम है।' प्रकाश डालिये। 15

शिवप्रसाद सितारेहिंद — राजा भोज का सपना, इतिहास तिमिर नाशक, भूगोल हस्तामलक जैसी रचनाएं।

- हिन्दुस्तानी शैली – उर्दू + हिन्दी
  - सरल, सहज
  - अरबी-फारसी शब्दावली

बाद की रचनाएँ इतिहास तिमिरनाशक इत्यादि फारसी शब्दावली से भरी हुई।

- नुक्ता परम्परा का आरंभ
- अरबी-फारसी शब्द ज़्यादा
-

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'परख' की 'कट्टो'

'परख' जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास है जिसकी नायिका का नाम 'कट्टो' है। जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी चरित्र वैसे भी काफी सशक्त होते हैं तो 'कट्टो' भी उसी की एक उपलब्धि है।

'कट्टो' एक बाल विधवा है जो 'सत्यधन' नाम के युवक से प्रेम करती है। कट्टो सत्यधन के प्रति श्रद्धा भी रखती है तथा उससे प्रेम भी करती है। सत्यधन कट्टो को चाहता भी नहीं चाहता तथा उसका विवाह उसके दोस्त बिहारी की बहिन 'जतिया' से हो जाता है।

कट्टो का विवाह बिहारी से विवाह हो जाता है तथा कट्टो बिहारी को भी वही स्थान देती है जो उसने सत्यधन को दिया था।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सत्यधन के लिए कट्टो आत्मदान करती है तथा बिहारी के साथ मिलना वह वैधव्य यज्ञ रचाती है। वस्तुतः कट्टो का प्रेम जटिल अन्तर्द्वंद्वों से भरा होते हुए भी भाव संवादी है तथा जैनेन्द्र कट्टो के माध्यम से संदेश देते हैं कि नारी की मुक्ति सहज आत्मदान में ही है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है। हिन्दी के प्रमुख प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त, नागार्जुन इत्यादि हैं। ये उपन्यासकार सामाजिक - आर्थिक समस्याओं को केन्द्र में रखते हुए उपन्यास लेखन करते हैं तथा इनके उपन्यास का नायक हमेशा मजदूर या कृषक होता है जो शोषणपरक व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति का आह्वान करता है।

हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास

यशपाल - झूठा सच, देशद्रोही, पार्टी कॉमरेड, दादा कॉमरेड

रांगेय राघव - मुर्दों का टीला

नागार्जुन - बटेसरनाथ, वरुण के बेटे

भैरवप्रसाद गुप्त - गंगा मैया, मशाल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी उपन्यास सामाजिक यथार्थवाद को अपने केन्द्र में रखकर चलते हैं जिसका अर्थ है कि समाज में समता स्थापित करने के लिए हिंसक क्रांति जरूरी है तथा साहित्य का कार्य हिंसक क्रांति को संभव बनाना है।

शिल्प की दृष्टि से प्रगतिवादी उपन्यास सरल सहज सम्प्रेषणीय भाषा का उपयोग करते हैं ताकि समाज के निम्न तबके तक अपनी बात पहुँचाई जा सके।

प्रगतिवादी उपन्यासों की सीमाएं -

- वैचारिक पक्ष हावी हो जाता है।
- विचारधारा का सरल प्रक्षेपण

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

पद्माकर रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं जो शृंगार, वीरता, राजाओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा आदि विषयों पर लक्षण ग्रंथ लिखते हैं।

पद्माकर के शृंगार वर्णन में देहप्रेम, भोगमूलक एवं क्रीड़ापरक शृंगार तथा विरह के विविध चित्र खींचे गए हैं।

भोगमूलक शृंगार -

गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन है
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है।
कहे पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी,
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।

क्रीड़ापरक शृंगार

गोरी गरबीली तेरे गात की गुराई आगे।

वियोग वर्णन

जो पावक बनायो तो न विरह बनायो
जो विरह बनायो तो न पावक बनायो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि पद्माकर ने दरबारी माहौल के अनुरूप दरबार के धैर्यहीन रसिकों को आह्लादित करने के लिए विशुद्ध शृंगार तथा देहक्रीड़ा के चित्र खींचे हैं।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घनानंद रीतिकाल में रहकर रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं जिसका अर्थ है कि वे दरबारी माहौल में रहकर भी दरबारीपन से मुक्त हैं।

घनानंद की भाषा में रीतिकालीन कृत्रिमता नहीं है तथा उनकी भाषा व्याकरणिक दृष्टि से एकदम ठीक है। इस कारण उन्हें 'भाषा प्रवीन' भी कहा जाता है।

उदाहरण -

ऐरी रूप अगाधे राधे, राधे, राधे राधे राधे
तेरी मिलिबे को ब्रजमोहन बहुत जतन हैं साधे।

इसके अलावा घनानंद की भाषा में अलंकारों का प्रयोग भी वहीं है जहाँ उन्हें अर्थ की गहराई प्रकट करनी हो। वे बुद्धिप्रेरित वक्रता के सख्त विरोधी हैं -

उजरनि बसी है हमारी अँखियानी देखो (विरोधाभास

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घनानन्द ने विशुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जो कि रीतिकालीन ~~काव्य~~ काव्य की सामान्य विशेषता है-

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला
लेहु मन पै देहु छटांक नहीं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अवगाहन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की रामभक्तिकाव्यधारा के श्रेष्ठ कवि हैं तथा उन्होंने रामचरितमानस, कवितावली, विनयपत्रिका, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल जैसी कई रचनाएँ की है।

तुलसी मूलतः सगुण ईश्वर के भक्त हैं तथा सगुण ईश्वर में भी वे विष्णु के अवतार राम की भक्ति करते हैं। उनके राम कबीर के निर्गुण राम नहीं है। वे स्पष्ट कहते हैं कि उनके राम दशरथ पुत्र राम ही हैं -

जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान
सोइ भगत हित, कोसलपति भगवान ॥

तुलसी ईश्वर की दास्य भक्ति करते हैं तथा स्वयं को ईश्वर के सामने दीन-हीन मानते हैं -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~मोरे~~

राम सों बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो
राम सो खरो है कौन मोसो कौन खोटो ||

तुलसी राम की भक्ति लोकमंगल के भाव से करते हैं उनके राम सुशील कल्याणों से निर्मित नायक है तथा समाज की तमाम विषमताओं से लड़ने का कार्य करते हैं।

तुलसी की भक्ति में पर्याप्त राजनीतिक चेतना भी मौजूद है। वे आदर्श राज्य के रूप में रामराज्य तथा वर्तमान स्थिति का कलियुग के रूप में चित्रण करते हैं।

दैहिक दैविक भौतिक तापा
रामराज्य काहुहि नहीं व्यापा |

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसी इसके अलावा समकालीन आर्थिक समस्याओं यथा बेरोजगारी, गरीबी का भी विस्तृत वर्णन कर राम की भक्ति करते हुए इन्हें दूर करने का आह्वान करते हैं।

तुलसी की भक्ति में पर्याप्त सामाजिक चेतना विद्यमान है। वे भक्ति करते हुए बेरोजगारी दूर करने का आग्रह करते हैं

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि
बनिक को बनिज न चाकरो चाकरी
सीधमान सोच -सब लोग कहें
एक एक सों कहां जाई का करी

इस प्रकार तुलसी न केवल भक्ति करते हैं बल्कि युगीन चेतना का वहन भी करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नया उपन्यास' नवलेखन के दौर की लेखन विधा है जिसमें अस्तित्ववादी दर्शन की पृष्ठभूमि पर भारतीय मध्यवर्ग की पीड़ाओं तथा स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों का निदर्शन हुआ है।

वस्तुतः आजादी के बाद 50 के दशक में आजादी से मोहभंग, नगरीकरण से सम्बन्धों में टूटन, अकेलापन, ऊब, संत्रास, टूटन, अवसाद, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में आमूलचूल परिवर्तन जैसी स्थितियाँ रचनाकारों की चेतना पर हावी थीं।

ऐसे में नया उपन्यास की 3 धाराएँ विकसित हुईं

- आधुनिकता बोध तथा महानगरीय बोध – इस वर्ग में वे उपन्यास शामिल हैं जिनमें शहरी मध्यवर्ग की अकेलेपन की पीड़ाएँ दर्शाई गई हैं-

निर्मल वर्मा – वे दिन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश – अँधेरे बन्द कमरे
न लौटने वाला कल

- यौन सम्बन्धों पर आधारित – नवलेखन के दौर में भावनात्मक संबंधों के अभाव को यौन सम्बन्धों से भरने की कोशिश को आधार बनाकर ये उपन्यास लिखे गए -

महेन्द्र ~~चौधरी~~ भल्ला – ~~[illegible]~~ एक पति के नोट्स
राजकमल चौधरी – मछली मरी हुई
मृदुला गर्ग – चितकोबरा

- स्त्री विमर्श – स्त्री समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यास

मन्नू भंडारी – आपका बंटी
प्रभा खेतान – छिन्नमस्ता
मृदुला गर्ग – मैं जुलान

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार नवलेखन का दौर निराला में आ चुके तथा छूट-छूट कर भी रहे मध्यवर्गीय पुरुष-स्त्रियों का दारुण चित्र पेश करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) भीष्म साहनी के उपन्यासों के आधार पर उनकी सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

भीष्म साहनी सामाजिक यथार्थवादी धारा के उपन्यासकार हैं जो प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए बिना किसी विचारधारा की लाग-लपेट के सामाजिक समस्याओं का यथार्थपरक चित्रण करते हैं।

उनके उपन्यास व सामाजिक चेतना

झरोखे – आर्यसमाजी परिवार में धार्मिक जड़ता के बीच बच्चे की सहज वृत्ति। – विद्रोह का संदेश

कड़ियाँ – विपरीत संस्कारों वाले पति-पत्नी का साथ रहकर संघर्ष करना

मय्यादास की माड़ी – सामंतवाद, राजभक्ति तथा पूँजीवाद का संघर्ष

नीलू-नीलिमा नीलोफर – अन्तर्धार्मिक विवाह न हो पाने की पीड़ा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तमस - साम्प्रदायिकता की समस्या

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद का आगमन हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में 1907 में हुआ। इससे पूर्व के मौलिक को प्रेमचंद पूर्व उपन्यास कहा जाता है।

प्रेमचंद से पूर्व उपन्यासों को तीन वर्गों में बाँटकर देखा जा सकता है-

(क) सुधारवादी / उपदेशात्मक उपन्यास -

भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों ने नवजागरण चेतना से प्रेरित होकर सुधारवादी उपन्यास लिखे, जिनके उदाहरण हैं -

देवरानी-जेठानी की कहानी - पं. गौरीदत्त
वामा शिक्षक - मुंशी ईश्वरी प्रसाद, मुंशी कन्हैया लाल
भाग्यवती - श्रद्धाराम फिल्लौरी
परीक्षागुरु - लाला श्रीनिवास दास
निस्सहाय हिन्दू - राधाकृष्ण दास
सौ अजान एक सुजान - बालकृष्ण भट्ट

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ~~ऐय्यारी~~ मनोरंजनपरक उपन्यास -
मनोरंजन के उद्देश्य से लिखे गए उपन्यासों को दो भागों में बांटकर देखा जा सकता है -

- ऐय्यारी तिलस्मी उपन्यास -
  - चंद्रकान्ता - देवकीनन्दन खत्री
  - चंद्रकान्ता सन्तति - देवकीनन्दन खत्री
- जासूसी उपन्यास
  - सरकटी लाश - गोपालराम गहमरी
  - जासूस पर जासूसी - गोपालराम गहमरी

(ग) ऐतिहासिक उपन्यास - इतिहास के विषयों को आधार बनाने के दो उद्देश्य थे - नवजागरण चेतना तथा यौन रोमांस के बने रहने आवरण

किशोरीलाल गोस्वामी - तारा, रजिया बेगम
मिश्रबन्धु - वीरमणि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा प्रेमचन्द पूर्व युग में कुछ यथार्थवादी उपन्यास भी लिखे गए —

भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र - घराऊ घटना (1893)
- बलवन्त भूमिहार (1896)

मेहता लज्जा राम शर्मा - धूर्त रसिक लाल

बृजनन्दन सहाय - सौन्दर्योपासक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'झूठा-सच' में अभिव्यक्त देश-विभाजन की समस्या पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'झूठा सच' यशपाल का प्रतिनिधि उपन्यास है जिसमें यशपाल ने देश विभाजन की पृष्ठभूमि तथा स्वतंत्रता के तुरन्त बाद की परिस्थितियों को लेखन का आधार बनाया है।

दो भागों में विभक्त इस महाकाव्यात्मक उपन्यास के पहले भाग 'वतन और देश' में विभाजन पूर्व मध्यकालीन जीवनशैली, उच्च वर्ग की स्वार्थपरता, मध्यवर्ग की कुंठाएँ तथा निम्नवर्ग की दयनीय जीवन दशाएँ वर्णित हैं। विभाजन के कारणों के रूप में यशपाल ने अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति को जिम्मेदार ठहराया है जबकि ~~[illegible]~~ तत्कालीन परिस्थितियों में कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के राजनीतिक स्वार्थों की ओर संकेत किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'देश का भविष्य' नाम से लिखे गए उपन्यास के दूसरे हिस्से में यशपाल स्वतंत्रता के उपरान्त आजादी के सपनों की मौत तथा निम्न वर्ग के शोषण की ओर संकेत किया है। यशपाल लिखते हैं कि स्वतंत्रता के बाद कुछ राजनेता तथा पत्रकार प्रगतिशील हैं जो देश का विकास चाहते हैं किन्तु कुछ भ्रष्ट राजनेता, पत्रकार इत्यादि देश को लूटने-खसोटने में लगे हैं।

यशपाल ने देश विभाजन के कारणों तथा नीतियों के बजाय तत्कालीन साम्प्रदायिक संघर्ष, दंगों, रक्तपात, लूटपाट इत्यादि विभीषिकाओं का यथार्थपरक तथा आँखों देखा सजीव वर्णन किया है जिससे दूसरा खण्ड के अनेक अध्याय रक्तरंजित

दृष्टि The Vision

पीछे की ओर से काटी गई और गलत तरह से मिलाई गई बाएं हाशिये की पंक्तियाँ: इस स्थान में प्रश्न ... के अतिरिक्त कुछ ... लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जा पढ़े हैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी उपन्यासों में हर काल में सामाजिक चिन्ताएँ केन्द्र में रही हैं तथा उपन्यासों ने अपने कथ्य सामाजिक परिस्थितियों से ही उठाए हैं।

उपन्यासों में स्त्री समस्याओं को ~~सर्वाधिक~~ सर्वप्रथम सशक्त अभिव्यक्ति प्रेमचंद ने दी। उन्होंने सेवासदन में नारी उत्पीड़न तथा वेश्या समस्या को केन्द्र में रखा तो निर्मला में बेमेल विवाह तथा विधवा समस्या को उठाया। कर्मभूमि तथा गोदान जैसे महाकाव्यात्मक उपन्यासों में तो स्त्री विमर्श मौजूद है।

तदुपरान्त जैनेन्द्र के नेतृत्व में चली मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास धारा ने बाहरी जीवन के बजाय 'स्त्री मन' के आन्तरिक संघर्षों को उघाड़ने का कार्य किया। परख, सुनीता, त्यागपत्र,

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कल्याणी आदि उपन्यासों में जैनेन्द्र ने नारी मन के अन्तर्द्वन्द्वों को उभारा है।

प्रगतिवादी उपन्यासों में यदा-कदा नारी स्वतंत्रता के प्रश्न उठाए गए हैं। यशपाल ने 'दिव्या' उपन्यास का लेखन नारी समस्या को उजागर करने हेतु ही किया है।

नया उपन्यास दौर स्त्री विमर्श की दृष्टि से काफी समृद्ध माना गया है। इस दौर में न केवल स्त्री की समस्याएँ लिखी गईं बल्कि स्त्री लेखकों ने स्वानुभूति के आधार पर कई उपन्यासों की अभिव्यक्ति की -

मन्नू भंडारी - आपका बंटी
प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती -

मृदुला गर्ग - चित्तकोबरा, कठगुलाब

Copyright – Drishti The Vision Foundation